ISSN : 2394-2886 UGC Serial No. – 64786

Suraj Punj

Journal of Educational Research

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

Volume–I No.2 April – June, 2018

Editor
Dr. Amresh Kumar

Published by
Suraj Sansthan Publication
Jorhat, Assam

166

- डॉ अम्बेडकर के "स्त्री–सशक्ती करण के विषय में दृष्टिकोण"
  श्वेता कुमारी 59-63
- बिहार में सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की चुनौतियाँ
  विवेका नन्द पाण्डेय 64-68
- डॉ0 अम्बेडकर और डॉ0 लोहिया की राजनैतिक विचारों की प्रासंगिकता
  भारती मुण्डा 69-73
- भारत में स्वतंत्रता बाद अनुसूचित जाति एवं जनजाति के सामाजिक उत्थान हेतु संवैधानिक प्रावधान
  डॉ. अजय कुमार पासवान 74-79
- उत्तर भारतीय संगीत के गेय पदों का बहुमुखी अध्ययन : एक आरम्भ
  डॉ0 दीप्ति सिंह 80-85
- डॉ0 अम्बेडकर एवं दलित राजनीति
  सत्येन्द्र कुमार अभय 86-90
- बिहार में उच्च शिक्षा और विकास की राजनीति
  अरूण कुमार 91-94

ooo

ISSN : 2394-2886

उत्तर भारतीय संगीत के गेय पदों का बहुमुखी अध्ययन : एक आरम्भ

डॉ0 दीप्ति सिंह*

वर्ण और नाद का सहज सम्बन्ध होता है। पद वर्णात्मक है और गेय नादात्मक। गेय पद की भाषा का स्वर और ताल से घनिष्ठ सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। स्वर का कर्षण भी गेय पद की भाषा पर निर्भर रहता है। कर्षण की भंगियाँ या मोड़–तोड़ पद की भाषा के अनुसार चला करते हैं।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यहाँ गेय पदों का अध्ययन किया गया, जिससे कि कई बातें उभर कर सामने आई। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में बन्दिशों की दृष्टि से सबसे सुलभ, विस्तृत एवं प्रचलित ग्रन्थ है– 'क्रमिक– पुस्तक–मालिका'। अतः इस अध्ययन की शुरुआत इसी से की गई है।

सर्वप्रथम भाषा की दृष्टि से पदों का अध्ययन किया गया। यह पाया गया कि सबसे अधिक पदों की रचना ब्रजभाषा में हुई है। इसके मुख्य दो कारण रहे होंगे। पहला कारण अधिकांश रचनाओं का ब्रजभाषी होना हो सकता है और दूसरा ब्रजभाषा की अपनी विशेषता। ब्रजभाषा में रचे पदों को स्वरबद्ध करना सर्वाधिक सरल है, क्योंकि इसमें कठोर वर्ण स्वतः ही मृदु वर्णों में परिवर्तित हो जाते हैं । उदाहरण के लिए निम्नलिखित पद देखें –

स्थायी – अति अरुन बरन पिया नैन तुम्हारे,
अब मानहुँ रति रस भये रगभगे,
करत केलि पिया पलक बिसारे।

अन्तरा– मंद मंद डोलत संकर सों,
सोभित मध्य मनोहर तारे।

प्रस्तुत पद में 'अरुण' और 'बरण' के 'ण' के स्थान पर 'न' 'शंकर' और 'शोभित' के लिए ब्रजभाषा में सहजता से 'श' की जगह 'स' कर दिया गया है जिससे गायन में लालित्य बढ़ता है।

ब्रजभाषा में रचित निम्नलिखित पद के अन्तरे में 'रमण' एवं 'भूषण' का 'ण' 'न' में परिवर्तित कर दिया गया है । कठोर वर्णों के मृदु वर्णों में परिवर्तित होने से गायन में सहजता आती है और माधुर्य की वृद्धि होती है।

अन्तरा – शंकर भोला पारबती रमन,
सित तन पंनग भूषन अनुपम,
काहे न सुमिरत भटकत तू फिरत।।

ह्रस्व–दीर्घ का परिवर्तन भी ब्रजभाषा में सहज ही स्वीकृत है। इसके अतिरिक्त इसमें ओंकार का सबसे अधिक प्रयोग होता है जो कि कर्षण के लिए अनुकूल है। ओंकार में शब्दों के रूप परिवर्तित होकर 'गया' से 'गयो', 'लिया' से 'लियो' हो जाते हैं। फलस्वरूप कर्षण में आसानी होती है। 'गयो' में जिस सुविधा और खूबसूरती के साथ स्वर को लम्बाया जा सकता है, 'गया' में उस रीति से नहीं किया जा सकता। गोलाई (ओंकार) में जैसी लोच और कर्षण

* राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

Suraj Punj, ISSN : 2394-2886

राजस्तुति सम्बन्धी अधिकांश पदों को ध्रुपद के तालों में निबद्ध किया गया है । स्वर, पद और ताल का परस्पर सामंजस्य होने के कारण पद का ओज स्वर–रचना से भी झलकता है। स्तुतिगान एवं यशोगान (राजस्तुति) के पद चौताल, सूलताल, झपताल, आदिताल, विलम्बित एकताल, विलम्बित तिलवाड़ा, विलम्बित त्रिताल एवं मध्यलय त्रिताल एवं मध्यलय झपताल में निबद्ध हैं ।

अकबर की कीर्तिगाथा का एक पद राग–गौरी, त्रिताल में इस प्रकार मिलता है –

स्थायी– अकबर दौर–दौर, मुर–मुर देखत तोको,
खलबल परी है सब ठौरे ।

अन्तरा– और कश्मीरे बल्ख, बुखारों सब जगजीतो
और गुजरात जीतो सब ठौर ।।

एक आशीर्वचनात्मक पद का उदाहरण देखें –

स्थायी– छत्रपति अकबर चिरंजीव जग में रहो जौलों धरनी धुवतारा छत्रपति।
अन्तरा– शुभघरि शुभमुहुरत अनंत जीवो आनंदभर सुखपावो छत्रपति।

एक पद में औरंगजेब की शोभा का वर्णन मिलता है जो जौनपुरी, विलम्बित एकताल में निबद्ध है ।

स्थायी– महाभाग की कहूँ कैसे खेछवि की रहिलो न जाये ।
अन्तरा– तखत बैठे शाहे औरंजेब मोरे नैनन में समाये ।।

वीरगाथा का एक पद इस प्रकार है। यह पद राग, शंकरा, विलम्बित एकताल में निबद्ध है।

स्थायी– कीनो रे करतार महाबलि औरंगजेब, भयो तोपे पूरो परताप ।
अन्तरा– अपबलि तपबलि नौखंड महाबलि सदारंग छाँडो परताप ।।

एक पद नवाब वाजिद अली शाह की प्रशंसा में लिखा गया है जो सादरे में निबद्ध है–

स्थायी– अचल रहो राज तखत मुबारक, बखत अली वाजिद अली शाह,
बादशाह दिन दूने आलमपनाह सूलतान।

अन्तरा– सप्तदीप नवखण्ड दस दिशा,
जस ऐसा फेल रहो है तुम्हारे गुनन को,
गुनिजन पावत गज तुरंग–नग,
झुकत हीरा मोतियन की माल लाल ।
कंचन सचल ।।

अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि ब्रजभाषा के पदों की संख्या सर्वाधिक है। ब्रजभाषा की लोकप्रियता के कारणों पर भी प्रकाश पड़ा है । वर्ण्य विषय की विविधता, भाषा की विविधता एवं छाप की विविधता सामने आई है । भक्तिधारा एवं दरबारीधारा के रचनाकारों के बीच के परस्पर लेन–देन पर प्रकाश पड़ा है एवं पदों के साहित्य पक्ष पर भी प्रकाश पड़ा है। अतः पदों की दृष्टि से भी पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे रचित क्रमिक पुस्तक मालिका संगीत का ग्रंथ होते हुये भी साहित्य को अमूल्य योगदान है।

****